पंचायत प्रतिनिधियों का जलवायु परिवर्तन एवं स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण रिपोर्ट - 2023-24

स्टेट क्लाइमेट चेंज एण्ड ह्यूमन हेल्थ सेल, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़

एवं

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण की प्रमुख झलकियां

प्रस्तावना

जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं पूरी दुनिया में भी।

वर्तमान में, वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों का स्तर पिछले वर्षों की तुलना में बहुत अधिक है, और गर्मी को रोकने की इसकी क्षमता बदल रही है। पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस

गैस की एक परत बनी हुई है, जो गर्मी को बाहर निकलने से रोकती हैं, और वे तापमान परिवर्तन (ग्रीनहाउस प्रभाव) पर प्रतिक्रिया नहीं करती हैं। इन गैसों में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं ये गैसें जब वायुमंडल में लंबे समय तक बने रहती हैं, तो उनके जलवायु परिवर्तन का कारण बनने की संभावना होती है।

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक यह भी बताते हैं कि पृथ्वी का अगर तापमान यूं ही बढ़ता रहा तो कुछ क्षेत्रों की उपजाऊ क्षमता समाप्त हो सकती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आंकड़ों के अनुसार, पिछले दशक से अब तक हीट वेव्स (Heat waves) के कारण लगभग 150,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

"जलवायु से जीवन जुड़ा है" अनुकूल जलवायु के कारण ही पृथ्वी में जीवन संभव हो पाया है, लेकिन मानवीय और प्राकृतिक गतिविधियों के कारण जलवायु की स्थिति बदल रही है। जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा प्रभाव आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। मनुष्य ने अपने हित के लिए पर्यावरण का दोहन किया जिसमें जंगल कटाई, रासायनिक खेती, अधिक वाहन, औद्योगीकरण, रसोई गैस, तालाबों को पाटकर सड़क, माल व रहवासी क्षेत्र बनाए इससे वातावरण में आक्सीजन से अधिक कार्बनडाई आक्साईड बन रहा है। जिसके परिणामस्वरूप हवा जहरीली हो गयी है, पानी दूषित हो गया है, मिट्टी बंजर हो रही है अनाज बेस्वाद और बीमार बना रहे हैं, जीव जन्तुओं और देसी उपजों की प्रजातियां घटती जा रही है।

विशेषज्ञों के अनुसार, पृथ्वी की एक–चौथाई प्रजातियां वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं।

गाँव में पंचायत की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पंचायत के मागदर्शन में ग्रामीणों के सहयोग से गाँव के जंगल, तालाब, नदी, खेती किसानी को बचाया जा सकता है। इसी सोच पर छत्तीसगढ़ राष्ट्रिय स्वास्थ्य मिशन के बजट के तहत स्टेट क्लाईमेटचेंज एंड ह्युमन हेल्थ एवं राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र के संयुक्त प्रयास से इस वर्ष पुनः राज्य के 33 जिलों के 2141 पंचायतों के 17283 पंचायत प्रतिनिधियों को जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण पुस्तिका –

जलवायु परिवर्तन की मार से छत्तीसगढ़ राज्य और यहाँ के लोग भी संघर्ष कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में औद्योगिकरण, वाहन की बढ़ती संख्या, आधुनिक खेती एवं रेत, कोयला, लौह–अयस्क के खनन से छत्तीसगढ़ की जलवायु प्रभावित हो रही है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से राज्य में सूखा, अतिवृष्टि, बेमौसम बरसात, भीषण गर्मी से आमजन जूझ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के उपरोक्त दुष्प्रभावों पर आम जन की एक समझ विकसित करने हेतु सरल शब्दावली में एक प्रशिक्षण माड्यूल का निर्माण किया गया। यह प्रशिक्षण माड्यूल राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र और क्लाईमेट चेंज एंड ह्युमन हेल्थ के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है।

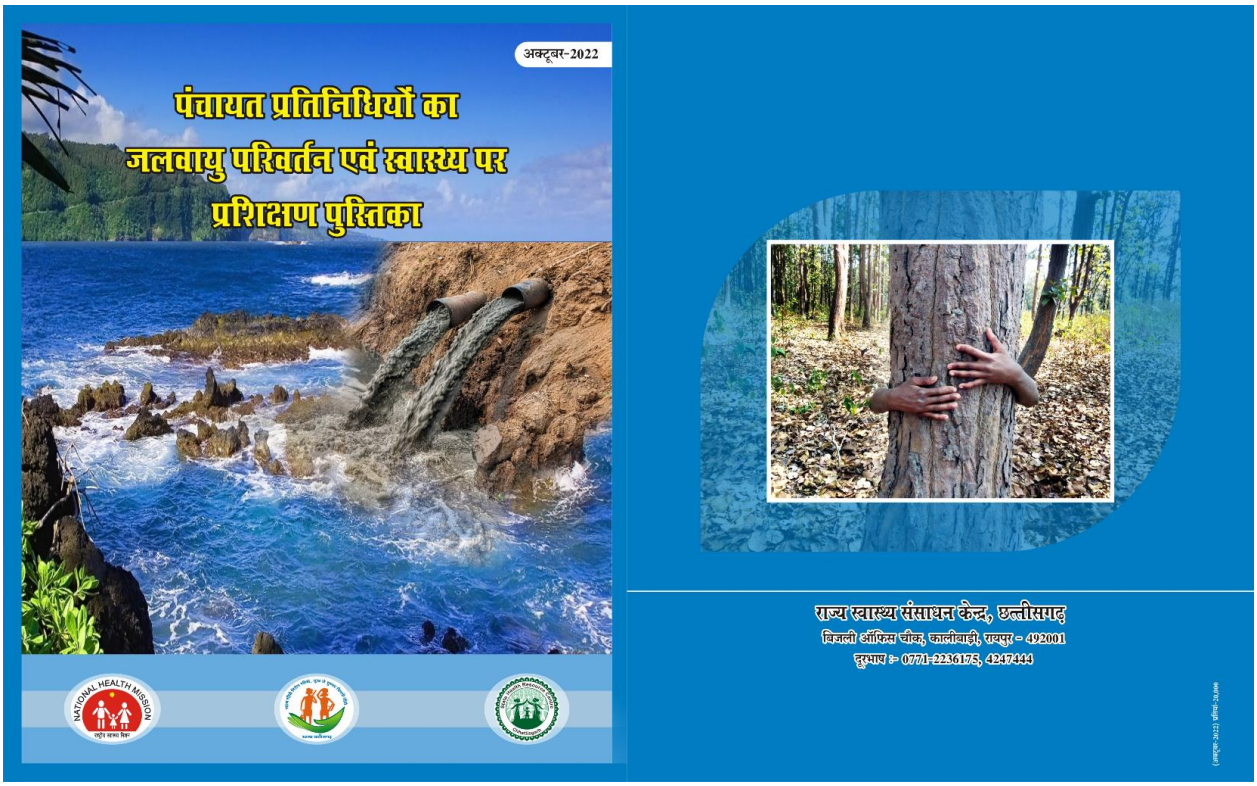

प्रशिक्षणकर्ताओं का प्रशिक्षण

जलवायु परिवर्तन पर पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण की शुरुआत वर्ष 2021 में की गयी थी। इस पहल में पहले चरण में राज्य स्तर पर राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र एवं क्लाईमेट चेंज एंड ह्युमन हेल्थ दवारा मितानिन कार्यक्रम के 35 जिला समन्वयको, 180 स्वास्थ्य पंचायत समन्वयको, 290 ब्लाक समन्वयकों, 3236 मितानिन प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण उपरांत पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा जलवायु परिवर्तन पर अपने लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। इसी संदर्भ में गत वर्ष प्रशिक्षण माड्यूल में कुछ बदलाव किये गए थे जिसकी जानकारी प्रशिक्षणकर्ताओं को दी गयी।

जलवायु परिवर्तन पर पंचायत प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण

इस वर्ष पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक पंचायत से 10 प्रतिनिधियों का चयन किया गया था। पंचायती राज संस्थाओं की अपने लोगों के प्रति परिभाषित जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए, पंचायत प्रतिनिधियों को जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य पर हो रहे खतरों के सम्बन्ध में जानकरी प्रदान करने प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यह प्रशिक्षण इस वर्ष मई–जून माह में 141 विकासखंडों के 2141 पंचायतों के 17283 पंचायत प्रतिनिधियों को दिया गया।

पंचायत प्रतिनिधियों के अबतक के प्रशिक्षण की संख्यात्मक जानकारो

क्र.	वर्ष	पंचायत	प्रतिभागी
1.	2020–21	2221	21995
2.	2021–22	2158	17071
3.	2022–23	2731	21312
4.	2023–24	2141	17283

जलवायु परिवर्तन प्रशिक्षण में प्रतिभागी संबंधी जानकारी			
क्र.	जिला	पंचायत में कुल कितने पंचायत शामिल हुए	पंचायत प्रशिक्षण में कुल कितने प्रतिभागी शामिल हुए
1.	बालोद	75	570
2.	बलौदाबाजार	78	659
3.	बलरामपुर	89	781
4.	बस्तर	104	924
5.	बेमेतरा	58	495
6.	बीजापुर	60	411
7.	बिलासपुर	59	494
8.	दंतेवाड़ा	60	546
9.	धमतरी	60	493
10.	दुर्ग	45	388
11.	गरियाबंद	74	642
12.	गौरेला पेण्ड्रा मरवाही	45	358
13.	जांजगीर	71	560
14.	जशपुर	118	840
15.	कबीरधाम	59	484
16.	कांकेर	104	821
17.	खैरागढ़–छुईखदान	30	272
18.	कोण्डागांव	73	507
19.	कोरबा	75	630
20.	कोरिया	28	187
21.	महासमुंद	69	623
22.	मनेन्द्रगढ़–चिरमिरी	45	357
23.	चौकी–मोहला–मानपुर	45	382
24.	मुंगेली	43	329
25.	नारायणपुर	27	206
26.	रायगढ़	103	842
27.	रायपुर	55	455
28.	राजनांदगांव	58	472
29.	सक्ति	59	423
30.	सारगंढ़–बिलाईगढ़	42	262
31.	सुकमा	45	392
32.	सूरजपुर	86	656
33.	सरगुजा	99	822
कुल		**2141**	**17283**

प्रशिक्षण के दौरान पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा गांव स्तर पर पहचानी गयी समस्या और समस्या के समाधान जलवायु परिवर्तन पर आयोजित प्रशिक्षण में कुल 2141 पंचायतों ने भाग लिया और अपने पंचायतों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोकने के लिए कार्ययोजना बनायी।

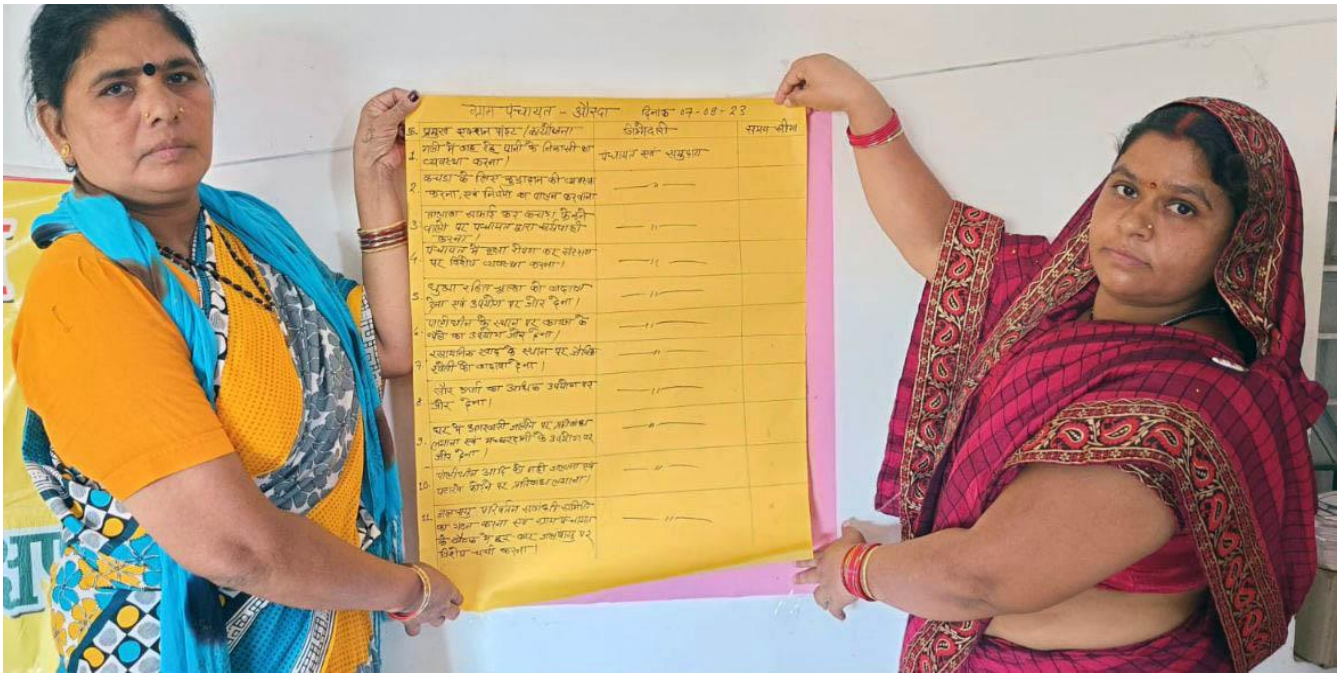

पशिक्षण के दारान पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा जलवायु परिवतन को रोकने के दिशा में बनाइ गइ कायेयोजना

(141 पंचायत के कायेयोजना का विश्लेषण के अनुसार)

क्र.	विषय जिस पर पंचायत द्वारा कार्ययोजना बनाई गई है	पंचायत की संख्या
1.	कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग बढ़ाना, रासायन खाद व कीटनाशक दवा पर रोक	141
2.	पेड़ लगाना	146
3.	वन संरक्षण–पेड़–पौधों की अवैध कटाई पर रोक, जंगल को आग लगने से बचाना	146
4.	धुआं रहित चूल्हा का निर्माण	121
5.	पालीथिन पर रोक व कपड़े के बैग का उपयोग	18
6.	सौर ऊर्जा लगाना	132
7.	कचरा प्रबंधन	104
8.	वर्षा के पानी को रोकना, सोखता गड्ढा बनाना, बांध बनाना	56
9.	साफ पीने का पानी की व्यवस्था, स्त्रोत के आसपास सफाई	123
10.	पंचायत स्तर पर जलवायु परिवर्तन रोकने समिति का गठन, कार्ययोजना बनाना, जागरूकता फैलाना, दीवाल लेखन	2096
11.	मच्छरदानी का उपयोग	27
12.	शराब व तंबाखू पर रोक, शराब बनाने पर रोक	45
13.	खुले में शौच को रोकना, शौचालय का निर्माण, उपयोग	49
14.	रेत उत्खनन	5
15.	पैरा आदि ना जलाना, खेत में आग नहीं लगाना	34
16.	जल संरक्षण एवं संधारण	65
17.	नाली निर्माण	29
18.	इलेक्ट्रिक वाहन को बढ़ावा देना	18

1. रासायनिक छोड़ा देसी अपनाओ – छत्तीसगढ़ राज्य दुनिया में धान के कटोरे के नाम से प्रसिद्ध है। राज्य में पिछले कुछ सालों में कृषि संबंधी बहुत से बदलाव जैसे कम समय में अच्छी फसल के लिए महँगी खाद, दवा और बीज के लिए बाजार पर

निर्भरता, देसी खाद, दवा और बीज की विलुप्तता देखने को मिले हैं। 141 प्रशिक्षण के दौरान पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा रासायनिक खाद को जलवायु परिवर्तन के एक प्रमुख कारक के रूप में पहचाना गया है एवं इसके समाधान के लिए गाँव में देसी खाद और देसी दवा के निर्माण किये जाने का निर्णय लिया गया।

2. पेड़ों की कटाई पर रोक और वृक्षारोपण – पेड़ों की कटाई पर कानून बनाया गया है परन्तु आज भी चोरी छिपे जंगल माफिया के द्वारा अपने लाभ के लिए पेड़ों की कटाई की जाती है। 146 प्रशिक्षण में इस समस्या को पहचाना गया एवं अधिक से अधिक पेड़ लगाने का संकल्प लिया गया।

विशेष प्रयास–वृक्ष लगाओ–जलवायु को सुरक्षित बनाओ

इस वर्ष पंचायत प्रतिनिधियों को जलवायु परिवर्तन विषय पर दिये गये प्र"िाक्षण के दौरान वृक्षारोपण का वि"ोष प्रयास किया गया। इस प्रयास के अंतर्गत राज्य के 33 जिलों में मितानिनों द्वारा कुल 159158, ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति द्वारा 16885 एवं पंचायत द्वारा 513609 पौधे लगाए गए।

3. जल प्रदूषण पर रोक लगाकर स्वच्छता का प्रयास – स्वच्छ जल से निर्मल कल संभव है। खेतों में रसायन, पानी के स्तरों के आस–पास की गंदगी आम समस्या है। 123 प्रशिक्षण में इन कारकों को जल प्रदुषण के कारक के रूप में पहचाना गया और इसके समाधान के लिए पेय जल स्त्रोतों के आसपास गंदगी नहीं करने के साथ ही तालाबों में जानवरों को नहलाने, कपड़ा और बर्तन धोने पर रोक लागाने एक निर्णय लिया गया।

4. बिजली कम सौर उर्जा के उपयोगिता का प्रयास – ताप विद्युत् गृहों में ईंधन के दहन से विनाशकारी गैस एवं ठोस पदार्थ निकलते हैं जो प्रयावरण को प्रदूषित करते हैं। 132 पंचायतों में बिजली के उपयोग को कम कर सौर उर्जा के उपयोग किये जाने का निर्णय लिया गया।

5. पेट्रोल डीजल वाहन के स्थान पर इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग – पेट्रोल और डीजल, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करते हैं जो जलवायु पर बुरा प्रभाव डालते हैं। 18 प्रशिक्षण में अपने अपने पंचायतों में डीजल और पेट्रोल के वहां के स्थान पर इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग करने के प्रयास की शुरुआत करने का निर्णय लिया गया।

6. कचरा प्रबंधन – कचरे का गलत निपटारा हमारे पर्यावरण को प्रभावित करता है। 104 प्रशिक्षण में पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा कचरे के सही प्रबंधन अर्थात सुखा कचरा और गीला कचरा का अलग–अलग निपटारा करना, कचरे के लिए स्थान सुनिश्चित करना, आदि का निर्णय लिया गया।

7. प्लास्टिक हटाओ, कागज और कपड़ा अपनाओ – पालीथिन पर्यावरण के लिए नुकसान दायक है इस बात को आज सभी समझते हैं और इसके समाधान के लिए प्रयास किया जा रहा है। 118 प्रशिक्षणों में प्लास्टिक के उपयोग पर और गहन जानकारी प्राप्त करने के बाद प्लास्टिक के बर्तनों, थैले के रूप में उपयोग करने के स्थान पर कपड़े के थैले, स्टील के बर्तन का उपयोग पर जोर दिए जाने का निर्णय लिया गया।

8. धुआं रहित चूल्हा का उपयोग – साधारण चूल्हे में अधिक लकड़ी और अधिक धुंए की समस्या होती है जो हितग्राही के लिए आर्थिक और स्वास्थ्य समस्या पैदा होती है। धुआं रहित चूल्हा कम ईंधन और बिना धुंए के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए उपयोगी चूल्हा साबित हुआ है। 121 प्रशिक्षण में पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा अपने पंचायतो में अधिक से अधिक धुआं रहित चूल्हा का निर्माण किये जाने का निर्णय लिया गया।

9. जल संरक्षण और संधारण करना – जल की हानि और जल की कमी एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में 65 प्रशिक्षणों में पहचाना गया और इस समस्या के समाधान के लिए वर्षा के जल को बचाने के लिए डबरी, तालाब, और पंचायत भवनों में जल संरक्षण की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया। इसी संदर्भ में 38 प्रशिक्षणों में बोरिंग और जल स्त्रोतों का जलस्तर बना कर रखने के लिए सोखता गड्ढा खोदने का निर्णय लिया गया।

10. शौचालय का उपयोग अनिवार्य करना – खुले में शौच पर्यावरण और मानव दोनों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। 49 प्रशिक्षणों में खुले में शौच में रोक लगाने एवं घर–घर में शौचालय का निर्माण और उसके अनिवार्य उपयोग किये जाने का निर्णय लिया गया।

11. नाली निर्माण – गंदे पानी का सही निकासीकरण आवश्यक है। इस बात पर सहमती बनाते हुए 29 प्रशिक्षणों में गंदे पानी के निकासी के लिए आवश्यकतानुसार नाली का निर्माण किये जाने का निर्णय लिया गया।

12. गुटखा, गुड़ाखू पर प्रतिबंध – गुटखा गुड़ाखू सेहत के साथ ही पर्यावरण के लिए भी हानिकारक है। आज गांव व शहर के हर रास्ते में गुटखा के पैकेट पड़े हुए मिलते है। गुड़ाखू का डिब्बा पड़ा हुआ मिलता है। पर्यावरण के साथ ही यह मानव शरीर के लिए जहर का काम करता है।

20 प्रशिक्षणों में पंचायत प्रतिनिधियों ने अपने अपने पंचायतो में गुटखा गुड़ाखू पर लोगों में जागरूकता लाने और इस पर प्रतिबन्ध लाने का निर्णय लिया गया।

13. मच्छर दानी का उपयोग – गाँव में मच्छर से बचाव के लिए कीटनाशक दवा, और अगरबत्ती का उपयोग किया जाता है जो की सेहत के लिए हनिकारक होता है। 27 प्रशिक्षणों में इस समस्या को जलवायु के लिए हानिकारक मानते हुए मच्छर से बचाव के लिए मच्छरदानी के उपयोग को अनिवार्य किये जाने का निर्णय लिया गया।

14. जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता के लिए रैली, नाटक और दीवार लेखन – 2034 प्रशिक्षणों में जलवायु परिवर्तन के पहचाने गए मुद्दों पर लोगों में जागरूकता लाने के लिए पंचायत स्तर पर रैली, नुक्कड़ नाटक और दीवार लेखन किये जाने का निर्णय लिया गया।

15. उपरोक्त जलवायु परिवर्तन की पहचानी गयी समस्या और समस्या के समाधान के साथ ही साथ रेत उत्खनन पर रोक, शराब बंदी, महिला हिंसा, बाल विवाह पर रोक लगाने का निर्णय लिया गया।

जलवायु परिवर्तन प्रशिक्षण पर पंचायत प्रतिनिधियों का अनुभव

पंचायत प्रतिनिधियों ने अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण को बचाने का संकल्प लिया (पत्थलगांव–जशपुर)

पंचायत प्रशिक्षण के दौरान पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा जल, वायु और मिट्टी के प्रदूषण के बारे में प्राप्त विस्तृत जानकारी को सुनने के बाद अपने गांव की वर्तमान स्थिति से जोड़ कर देखा गया। इसके साथ ही पंचयत प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया की हमारे गांव की मिट्टी पहले जैसे उपजाऊ नहीं रही है और पानी भी अब जितना मिलना चाहिए वह नहीं मिल रहा है। पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण की प्रशंसा की और ग्राम सभा में प्रशिक्षण पुस्तक को सभी के मध्य पढ़े जाने की आवश्यकत को पहचाना। इसके साथ ही अपनी आने वाली पीढ़ी को जलवायु परिवर्तन के पहचने गए प्रभावों से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करने का संकल्प लिया।

वीडियो देखकर प्रतिनिधयों की आँखे खुल गयी (विकासखंड–निकुम, जिला–दुर्ग)

निकुम विकासखंड में 15 पंचायत में पंचायत प्रतिनिधियों का जलवायु परिवर्तन पर प्रशिक्षण हुआ। हर पंचायत में प्रशिक्षण को आवश्यक माना गया। प्रशिक्षण के दौरान जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों पर वीडियो दिखाया गया। इस वीडियों को देखने से जलवायु परिवर्तन से आम व्यक्ति के जीवन में होने वाले खतरों को देखकर पंचायत प्रतिनिधियों की आँखे खुल गयी और सभी ने इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए अपने–अपने पंचायत में जलवायु परिवर्तन के खतरों के खिलाफ कार्ययोजना बनायी और वर्तमान में उन कार्ययोजनाओं पर गंभीरता से काम कर रहे हैं।

प्रशिक्षण के बाद ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के साथ जलवायु परिवर्तन पर कार्य किया गया (विकासखंड–डौंडी लोहारा, जिला–बालोद)

चयनित पंचायत प्रतिनिधियों ने जलवायु परिवर्तन व स्वास्थ पर बहुत ही खुशी और उत्साह के साथ प्रशिक्षण में भाग लिए। पंचायत प्रतिनिधयों ने प्रशिक्षण के बारे में यह बोला

कि यह प्रशिक्षण विकासखंा के सभी ग्राम पंचायतों में होना चाहिए और तीन दिन का नही कम से कम सात दिन का होना चाहिए जिससे हमारी पर्यावरण को हम जन सामुदाय के साथ मिलकर बचाने का प्रयास कर सकें। इसके साथ ही उनके द्वारा बोला गया की हर साल आयोजित होने वाले इस प्रशिक्षण से बहुत सुधार हो रहा है। **गुंडरदेही–बालोद**

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर मुद्दा है

(कांसाबेल, ग्राम पंचायत–चोंगरीबहार, जिला–जशपुर)

ग्राम पंचायत चोंगरीबहार में तीन दिवसीय पंचायत प्रशिक्षण में तीन पंचायत के प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण लिया। पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण के विषयों पर जानकरी प्राप्त करने के बाद बोला की हम जिस पर्यावरण में रह रहे हैं वह कितना बदला गया है और इसमें मानव को कितना खतरा है यह प्रशिक्षण से समझ में आया। पंचायत प्रतिनिधियों रणनीति तय करते हुए बोला की प्र"िाक्षण के बाद गांव में हर व्यक्ति तक जलवायु परिवर्तन के बारे में समझाएंगे और सब मिलकर जलवायु में हो रहे खतरनाक परिवर्तन को रोकने का प्रयास करेंगे।

प्रशिक्षण से गांव की समस्या पहचानने में मिली मदद

ग्राम पंचायत–भूलूमुड़ा

गांव में पंचायत प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण पुस्तक से जानकारी देने के बाद पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा गांव में जलवायु परिवर्तन को प्रभावित करने वाली समस्याओं को पहचानना चालू कर दिया गया। जिससे की नाली की गंदगी, गली में कचरा और पेड़ों की कटाई, घर में चूल्हे का धुआं। पंचायत प्रतिनिधयों ने प्रशिक्षण के बाद ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति के साथ मिलकर गांव की पहचानी गयी समस्याओं में सुधार करने की कार्ययोजना बनायी गयी।

प्रशिक्षण समस्या की जानकारी और समाधान भी बताता है

(विकासखंड–बागबहरा, जिला–महासमुंद)

पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण के दौरान बोला की जलवायु परिवर्तन पर जानकरी का यह प्रशिक्षण हमें समस्या की जानकारी तो देता ही है और साथ ही इन समस्याओं के समाधान की जानकरी भी प्रदान करता है। प्रतिनिधयों ने यह भी बोला की हमारे द्वारा ही जल, वायु

और मिट्टी को प्रदूषित किया जा रहा है इसलिए हम ही इसे रोक सकते हैं। इसके साथ ही इस प्रशिक्षण को साल में दो बार आयोजित किये जाने का प्रस्ताव रखा गया।

उपसंहार – जलवायु परिवर्तन ,सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्या है जिससे पूरी दुनिया जूझ रही है और इसके समाधान के लिए सभी देशो की सरकारों द्वारा नीति निर्माण और नियम–कानून बनाए जा रहे है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकने का प्रयास मानव की सहभागिता के बिना संभव नहीं है। हम बदलेंगे, युग बदलेगा – स्वस्थ और स्वच्छ जलवायु बनेगा। हमारे आसपास का पर्यावरण कैसा होगा यह हमारा निर्णय होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन एक गंभरी मुद्दा है जिसे पंचायत प्रशिक्षण के माध्यम से आमजन द्वारा पहचनाना एवं इसकी सुरक्षा के लिए प्रयास किया जा रहा है। आशा है पूरे छत्तीसगढ़ में पंचायतों के प्रयास से जलवायु परिवर्तन की दिशा में सार्थक कदम उठाएं जाएंगे।

प्रशिक्षण उपरांत पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकने किये गये प्रयास संबंधी सफलता की कहानी

गुंडरदेही विकासखंड की पंचायतों के द्वारा जलवायु की सुरक्षा के लिए बहुत से प्रयास किये गये (विकासखंड–गुंडरदेही, जिला–बालोद)

गुंडरदेही विकासखंड के 15 पंचायतों में जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य विषय पर पंचायत प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण किया गया। प्रशिक्षण के बाद पंचायत प्रतिनिधयों के द्वारा अपनी–अपनी पंचायतों में अपने लोगों को प्रशिक्षण में सीखे गए विषयों पर प्राप्त जानकारी को साझा किया गया और अपनी पंचायतों में जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकने के लिए लोगों के साथ मिलकर कार्ययोजना बनाई। गुंडरदेही विकासखंड की धनगांव पंचायत में वृक्षारोपण कर एक बगीचा तैयार किया गया और उसमे समुचित पानी की व्यवस्था की गयी और उसकी घेराबंदी की गयी और उस बगीचे का नाम आक्सीजोन रखा

गया। इसके साथ ही गांव के सार्वजानिक शौचालय, तालाब के किनारे एवं गौठान में वृक्षारोपण कर सुंदरता, आक्सीजन क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास किया गया। गुंडरदेही विकासखंड के अन्य पंचायतों में भी जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के निम्न प्रयास किये गए जिनमें से प्रमुख रूप से मोहदीपाठ पंचायत में प्रशिक्षण के बाद घर–घर में धुआं रहित चूल्हा बनवाने का कार्य प्रगति से किया गया। टिकरा पंचायत में प्रशिक्षण के बाद बहुत से घरों से निकलने वाले गंदे पानी की निकासी का कार्य किया गया एवं चीचा और खटोरी पंचायत में सार्वजनिक भोजन में प्लास्टिक की प्लेट, ग्लास और कटोरी के स्थान पर स्टील का बर्तन उपयोग किया जा रहा है।

धमधा विकासखंड के पंचायतों में कचरा प्रबंधन और धुआं रहित चुल्हा पर किया जा रहा है कार्य (विकासखंड–धमधा, जिला–दुर्ग)

दुर्ग जिले के धमधा विकासखंड में 15 पंचायत के प्रतिनिधियों का जलवायु और स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण किया गया। प्रशिक्षण के बाद ग्राम पंचायत सांकरा गांव की महिला सरपंच के द्वारा गोम में कचरा प्रबंधन के लिए लोगों को समझाईश दी गयी और गांव में सुखा कचरा और गीला कचरा के फेंकने की व्यवस्था की गयी। इसी के साथ ही साथ गांव की सरपंच के द्वारा गांव में चूल्हे के धुंए से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए धुआं रहित चूल्हा बनाने के लिए स्वयं से प्रचार–प्रसार के साथ ही चूल्हा निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। सांकरा पंचायत में इन कार्यों के साथ ही गंदे पानी की निकासी के लिए नाली निर्माण और सोखता गड्ढा का निर्माण कार्य किया गया। सांकरा गांव की सरपंच पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण को हर तीन माह में करने का सुझाव देती है क्योंकि उनके अनुसार इस प्रशिक्षण से जलवायु को बचाने से संबंधित बहुत सी जानकरियां प्राप्त होती है।

भैयाथान विकासखंड के बत्रा पंचायत में तालाब के साफ सफाई पर कार्य किया गया (विकासखंड–भैयाथान, जिला–सूरजपुर)

भैयाथान विकासखंड में 13 पंचायत के प्रतिनिधियों का जलवायु और स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण किया गया। प्रशिक्षण प्राप्त सभी पंचायतों के द्वारा अपने पंचायतों में जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों को पहचाना और उसकी रोकथाम के प्रयास किये। इन्हीं पंचायतों में से एक बतरा पंचायत में प्रशिक्षण के बाद पंचायत में स्थित तालाब के पानी को प्रदूषित करने संबंधित चर्चा कर कार्ययोजना बनायीं गयी। कार्ययोजना के अनुसार तालाब की सफाई की जिम्मेदारी सभी सरपंच और पंचों ने निभाते हुए तालाब की पूरी सफाई करवाई और तालाब में जानवरों को नहलाने के लिए प्रतिबंध लगाया गया। पंचायत में लोगों के द्वारा पंचायत प्रतिनिधियों की बात पर सहमती दिखाते हुए तालाब में गंदगी करना बंद कर दिया। अब तालाब का पानी साफ रहता है।

मोहला विकासखंड के ग्राम पंचायत मटेवा में पैरा जलाने पर प्रतिबंध लगवाया गया और वृक्षारोपण पर जोर दिया गया (विकासखंड–मोहला, जिला–मोहला मानपुर अम्बागढ़ चौकी)

विकासखंड मोहला में 15 पंचायत के प्रतिनिधियों का जलवायु और स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण किया गया। प्रशिक्षण के बाद मोहला के ग्राम पंचायत मटेवा आक्सीजन के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता को पहचानते हुए तालाब, सड़क किनारे, सहला और ग्राम पंचायत परिसर में 500 पौधे लगाए गए और उसे सुरक्षित रखने के लिए उसका घेराव किया गया और स्कूल और पंचायत के चपरासी को इन पौधे में पानी देने की जिम्मेदारी दी गयी। चपरासी के द्वारा पेड़ों में पानी डाला जा रहा है और पौधे सुरक्षित हैं। इसके साथ ही धान कटाई के समय तीन चार बार गांव में मुनादी करवाकर खेत में पैरा को जलाने से मना किया गया। इस वर्ष किसी ने भी खेत में पैरा नहीं जलाया। इसके साथ ही पंचायत में कचरा प्रबंधन के लिए समुचित स्थानों में कचरा डिब्बा लगवाया गया।

प्रशिक्षण के बाद जंगल की कटाई पर रोक लगायी गयी
(ग्राम–केरागांव, विकासखंड–विश्रामपुरी, जिला–कोंडागांव)

विश्रामपुरी विकासखंड के 15 पंचायत के 109 पंचायत प्रतिनिधियों ने जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण लिया। विश्रामपुरी के केरागांव के आश्रित गांव डीहीपारा में जंगल की कटाई हो रही थी। प्रशिक्षण के बाद पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा मुनियादी करवाकर गांव वालों के साथ बैठक की गयी। बैठक में पंचायत प्रतिनिधियों के द्वारा प्रशिक्षण में जंगल की कटाई से जलवायु किस तरह से प्रभावित होती है और इससे मनुष्य को कौन–कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है यह जानकारी गांव वालों को और गांव की वन समिति के सदस्यों को दिया गया। बैठक में यह निर्णय लिया गया की जंगल से जो भी गीली लकड़ी लाएगा उससे 5000 रूपये दंड लिया जाएगा और बैठक रजिस्टर में उसे लिखा जाएगा। इसके साथ ही बारी–बारी से जंगल की निगरानी के लिए कार्ययोजना बनायी गयी। पंचायत और ग्रामीणों के प्रयास से अब जंगल की कटाई नहीं हो रही है।

पंचायत के द्वारा जल प्रदूषण के बचाव पर विशेष प्रयास किया गया
(विकासखंड–डोंगरगढ़, जिला–राजनांदगांव)

डोंगरगढ़ विकासखंड में 13 पंचायतों ने पंचायत प्रशिक्षण में 10 बिन्दुओं पर कार्ययोजना बनायी और अपने–अपने पंचायत और ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में प्रशिक्षण में सीखे विषयों पर जानकरी दी। पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा पानी की समस्या को गंभीरता से लेते हुए पानी को बचाने के लिए गांव वालो का एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया

जिसमें पानी को बचाने के लिए अपील की जाती है। इसके साथ ही डबरी, कुआं और तालाब का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। कुछ पंचायतों में तालाब में बर्तन मांझने और गंदा कपडा फेंकने के लिए सख्ती से मना किया गया। समिति के द्वारा तालाब की निगरानी नियमित की जा रही है।

पंचायत में ध्वनी प्रदूषण पर कार्य किया जा रहा है

(विकासखंड–बलौदाबाजार, जिला–बलौदाबाजार)

बलौदाबाजार विकासखंड के 15 पंचायत के प्रतिनिधियों ने जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के मुद्दे पर प्रशिक्षण प्राप्त किया और प्रशिक्षण के दौरान समूह चर्चा में अपने गाँव में जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारकों को पहचाना। प्रशिक्षण के बाद पंचायत प्रतिनिधियों ने अपने गाँव के लोगों के साथ मिलकर 99 गाँव में पेड़ लगाने का कार्य किया। इसके साथ ही साथ ध्वनी प्रदूषण के मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए शादी ब्याह में डीजे पर पुर्णतः प्रतिबन्ध लगाया गया।

जलवायु परिवर्तन के प्रशिक्षण के दौरान पहचाने गए मुद्दों पर पंचायत दवारा किया जता है कार्य (विकासखंड–सहसपुर लोहारा, जिला–कबीरधाम)

सहसपुर लोहारा में पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण के दौरान सीखी सभी बातों को अपने गाँव के लोगों के साथ साझा किया और सभी ने मिलकर अपने गाँव अपने पंचायत को प्लास्टिक मुक्त करने का निर्णय लिया और इसके साथ ही इस निर्णय पर पूरे वर्ष अडिग रहने का संकल्प भी लिया। पंचायत में अब प्लास्टिक का उपयोग धीरे–धीरे कम हो रहा है। गाँव में लोग अब बाजार अपने साथ कपड़े का थैला लेकर जाते है।

पेड़ो की कटाई पर रोक लगाने संगठन बैठक किया गया (विकासखंड–पाली, जिला–कोरबा)

पाली विकासखंड में पंचायत प्रशिक्षण के दौरान में जंगल क्षेत्र की पंचायतों से जंगल कटाई की समस्या पर चर्चा की गयी। इस समस्या के समाधान के लिए गाँव में संगठन बैठक में इस समस्या पर चर्चा की गयी और जंगल में बैठक कर पेड़ों को बचाने के लिए पेड़ों को पकड़कर नारे लगाए गए और लोगों को समझाया गया की मेरा पेड़ मेरा जीवन इसे मत काटो समझाया गया।

पंचायत प्रशिक्षण से जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकने निरंतर प्रयास किया जा रहा है (विकासखंड–पाटन, जिला–दुर्ग)

पाटन विकासखंड में पंचायत प्रशिक्षण में 15 पंचायतों के 144 सदस्यों ने भाग लिया। पंचायत प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षण के दौरान अपने गाँव में पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारकों को करीब से पहचाना और उसमे सुधार के लिए 10 बिन्दुओं की कार्ययोजना बनायी। इस कार्ययोजना पर कार्य करते हुए सभी पंचायतों में गाँव वालों की सहभागिता में पेड़ लगाए गए और उनकी देखभाल के लिए निगरानी समिति बनायी गयी। इसके साथ ही गाँव में कचरा इधर–उधर फेंकने की आदत को छोड़ने के लिए लोगों को समझाया गया और गाँव में कचरा फेंकने के लिए कचरा का दिब्बर रखवाया गया। समिति द्वारा और पंचायत के द्वारा इस व्यवस्था की नियमित निगरानी की जा रही है।

* * *

पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण की प्रमुख झलकियां

सरपंच, पंचों को मिला प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭अंवरी

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र के निर्देशन व जिला समन्वयक राजमणी पवार के मार्गदर्शन में कुरूद ब्लाक के ग्राम पंचायत सुपेला में तीन पंचायत सुपेला, अंवरी और सिलघट में पंचायत प्रतिनिधियों का हमारा पर्यावरण, जलवायु, मिट्टी प्रदूषण का कारण व रोकथाम पर और स्वास्थ्य स्वच्छता पेयजल पर 3 से 5 मार्च तक गैर आवासीय प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित किया गया। ब्लॉक समन्वयक मोंगरा साहू, मितानिन, प्रशिक्षक प्रमाती साहू मास्टर ट्रेनर ने प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर सरपंच लीलेश्वरी देवांगन, पुनेश्वर साहू सरपंच अंवरी, खिलेश्वरी सिंह व पंचगण उपस्थित थे।

हरिभूमि

रायपुर - धमतरी भूमि

6 Mar 2022

जलवायु परिवर्तन एवं जनस्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने पंच-सरपंचों को दिया जा रहा प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭कुरूद

राज्य स्वास्थ्य संसाधन केंद्र द्वारा प्रदेश की ग्राम पंचायतों को जलवायु परिवर्तन एवं जन स्वास्थ्य के प्रति पंचायतों की भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए सरपंचों एवं पंचों को गैर आवासीय प्रशिक्षण कुरूद ब्लाक में 3 से 12 मार्च तक विभिन्न ग्राम पंचायतों में दिया जा रहा है।

ब्लाक स्वास्थ्य समन्वयक सुशीला निर्मलकर ने बताया कि कुरूद ब्लॉक में जलवायु परिवर्तन, वायु भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले नागरिकों के स्वास्थ्य की जानकारी के लिए भी यह प्रशिक्षण आयोजित हो रहा है जिसमें 3 से 5 मार्च तक ग्राम पंचायत सुपेला, भुसरेंगा, चरमुड़िया में अंवरी, सुपेला, कन्हारपुरी, भुसरेंगा, चरमुड़िया, सिलघट, चोरभट्ठी भोथली, भाठागांव के पंच सरपंच ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण में जलवायु परिवर्तन एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिये पंचायत जनप्रतिनिधियों को प्रशिक्षण देते हुये बताया गया कि वे ग्रामीण जनता को जागरूक बनाकर स्वस्थ एवं जागरूक समाज का निर्माण करेंगे। श्रीमती निर्मलकर ने आगे बताया कि प्रशिक्षण का अगला दो चरण 7 से 9 मार्च को मंदरौद ,चटौद, भेंडरा, कमरौद, सिंधौरीकला, मंदरौद, चटौद, हथबंध, दरबा, भेंडरा, चरोटा, जोगतराई के अलावा 10 से 12 तक सिर्री में सिर्री और चिंवरी के सरपंच एवं पंचों को इन विषयों पर प्रशिक्षित किया जाएगा प्रशिक्षण में सरपंच पुष्पा चंद्राकर, सरपंच इंदल साहू, पंच जयनी, राधिका, माया, हेम केसरी, दुर्गा, चित्रलेखा, सोहद्रा, पुनाबाई, पन्ना धुव, नरेंद्र, नीरा, दूलेश, रामायण, सुरेश तिवारी, बसंती, जमुना, उषा, खिलेश्वरी, कुमारी सरोज, सुनीता चंद्राकर, गणेज राम ,तामेश्वर, शोभाराम, तामेश्वर साहू तथा एमटी रेवती ध्रुव सहित बड़ी संख्या में पंचायत पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में दी गई जानकारी

पंचायत प्रतिनिधियों के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में दी गई विभिन्न जानकारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ तुड़ागांव (कोरासी)

छुरा विकासखंड के ग्राम मड़ेली के गायत्री मंदिर परिसर में 30-31 अक्टूबर तक पंचायत प्रतिनिधियों का दो दिवसीय प्रशिक्षण रखा गया। जिसमें आसपास के ग्राम कनेसर, जुनवानी, पक्तिया, बोइरगांव, मड़ेली, जरगांव, रवेली, पंडरीपानी, हरदी, डांगनबाय, तुमगांव, खैरझिटी, ओनवा, लोहड़ार, गिधनी, खड़मा, कुरेकेरा, करचाली, देवसरा, केड़ीआमा आदि 25 गांव के पंचों को बुलाकर प्रशिक्षण छुरा विकासखंड के ब्लॉक समन्वयक दामिनि साहू के द्वारा दिया गया। जिसमें स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में बहुत सारी जानकारियां दी गई। जैसे पेयजल, शौचालय का उपयोग, कचरे का सही निपटारा आदि बीमारियों से बचने के लिए स्वास्थ्य के बारे में बताया गया। वहीं गांव के मुख्य समस्याओं के बारे में भी शासन के द्वारा जो योजना चलाई जा रही है उसकी जनता द्वारा लाभ लेना, खाद्य सुरक्षा के बारे में बताया गया। जैसे राशन दुकान, रोजगार गारंटी, मध्यान भोजन, आंगनबाड़ी में दी जाने वाली पोषण आहार सेवाएं में क्या-क्या समस्याएं आती है और समस्या का समाधान कैसे किया जाए सकता है। प्रशिक्षण के माध्यम से सभी पंचों को बताया गया। इस प्रशिक्षण में मितानिनों द्वारा भी संबोधित स्वच्छता के बारे में बताया गया प्रशिक्षण में उपस्थित मितानिन प्रशिक्षिका मंजुषा जैन , रेणुका पटेल, तारणी सोनवानी, बिंदेश्वरी ठाकुर उपस्थित रही।